।। बिरह को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

✻

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ बिरह को अंग लिखंते ||

|| पद ||

म्हारो ने संदेसो साहेब सांभळो || बिनाजी सुणीयां रो, नही ये सूल ||
ब्रहन बिचारी तन कूं छाडसी || रही ऊरध मुख झूल || टेर ||

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि हे परमात्मा मेरा संदेशा सुणो । आप नही सुणेगे तो मेरा दु:ख कैसे मिटेगा । बिरहन कहती है की मेरा दु:ख आपने नही सुना तो मै शरीर को त्याग दुगी । मै उन्धे मुंह झूल रही हुॅ । ||टेर||

बरस अठारा हर बिना काडीया || म्हारे आस रही घर माय ||
अब तो जोगण हर होय जाव सूं || बस्तर देऊँजी बगाय || १ ||

मैने आपके प्राप्ती के बिना अठारह बरस निकाले है । मुझे आदि घर की आशा लगी है । अब तो मै,हे परमात्मा करमो से अलग होकर विज्ञान बैरागी हो जाउंगी । बस्तर याने त्रिगुणी माया के सभी कर्म व भर्म त्याग कर बैरागी बन जाउगी । ||१||

काँयेतो ढोल्यो हर नही घालता || भेद न देताजी मोय ||
बीना तो दिटी साहेब चीजरो || म्हाने दु:ख दालद नही होय || २ ||

हे परमात्मा आप ढोल्या याने सतशब्द कैसे प्रगटता है उसका भेद नही देते तो बिना देखी हुई चीज का मुझे दु:ख व पश्चाताप नही होता । ||२||

सबदां कलेजो राम जी बींदियो || म्हारे करोत बहे उर माय ||
नख चख साले रामजी निस दिना || मो सूं हर बिना रयो नही जाय || ३ ||

सतस्वरुप ज्ञान से मेरा कलेजा छेदे गया व मेरे हृदय मे करवत बहने जैसा दर्द होने लगा । मेरे नख से चख तक रात दिन यह दर्द हो रहा है । मेरे से परमात्मा के बिना रहा जाता नही है । परमात्मा कब मिलेंगे यह बिरह अखंडीत लगी रहती है । ||३||

अब तो जग मे वो हर नही आवडे || आप मिलोनी आय ||
ईण तो अपराधी दुष्टी जीवरो || जलम अकारथ जाय || ४ ||

हे परमात्मा अब त्रिगुणी माया के सुख मुझे नही सुहाते । इसलिये सतस्वरुपी रामजी आप आकर मुझे मिलो । इस अपराधी व दृष्ट जीव का जन्म आपके मिले बिना बेकार जा रहा है। ||४||

अेकण मेल दूजे चडी || तीजी खडी छू जी आण ||
बजर दरवाजा हर नही ऊघडे || रया क्राराजी ताण || ५ ||

ऐक महल याने पिण्ड, पिण्डसे दुजा महल ॲने खण्ड मे मै चढी व तिसरे ब्रम्हण्ड पर आकर खडी हुई । परन्तु बजर पोल का दरवाजा मुझसे नही खुल रहा है। ये दरवाजा बहुत मजबूत लगा हुआ है । ||५||

चेन तमासा हर दिखलाय के || मत डेहकावोजी मोय ||

किरपा करोनी जन पर दयालजी || मोय द्रसण दो पट खोय || ६ ||

हे परमात्मा माया के चैन तमाशा बताकर मुझे मत बहकावो । हे दयालु आप मुझ पर कृपा करो व मुझे पट खोल कर दर्शन दो । ||६||

जन सुखदेव हरजी सूं बीणती || सुणज्योजी सुरत लगाय ||
अमर लोक जी साहेब आपरो || म्हने बडोजी देखण रो चाव || ७ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले कि हे परमात्मा मेरी प्रार्थना को ध्यान से सुणो । मुझे आपके अमर लोक को देखने की बहुत इच्छा हो रही है । ||७||

|| साखी ||

ब्रेह अग्न यूं प्रजळे || दूँ बन मंझ कहाय ||
बिन ईन्दंर बरस्यां बाहेरी || बूझे कुणी तें जाय || ८ ||

जैसे वन के मध्य मे आग लगने पे बन जलता है वैसे बिरह रुपी अग्नि मे मै जल रही हुँ । वन की यह आग इंद्र के बरसे बिना किससे बुझ सकती है ऐसे ही परमात्मा के दर्शन के बिना मेरी बिरह अग्नि कैसे बुझ सकती है ? ||८||

लड़ लाकड़ सब ही जळे || रूखाँ करे बिनास ||
चोमासो बिन बरसीयाँ || बन जीवे किण आस || ९ ||

बन के बिचो बिच भारी अग्नी लगनेसे गील्ले,सुखे,जिन्दे पेड जलकर खतम हो जाते है। ये बन चार माह बारीस बरसे बिना किस आशा से जीन्दा बच सकेंगे अिसी तरह बिरहन अॅने मेरी आत्मा रामजी आपके बिरह मे जल रही है वह आपके मिले बगर किसकी आशा से शान्त होगी । ||९||

मो पे रहयो न जात हे || सुण हो स्याम सुजाण ||
ब्रेह पुकारे मिलण कूं || द्रसण दीज्यो आण || १० ||

हे श्याम सुजान आपके बिना मेरे से नही रहा जाता है यह मेरी सुणो । हे रामजी बिरहन आपको पुकार रही है अिसलीये आप आकर मुझे दर्शन दो । ||१०||

नेण निसो दिन निरखतां || बपडां रहया हराय ||
जीभ बिचारी घस गई || तुज हर दया न माय || ११ ||

हे रामजी सुरत आंखे रात दिन आपकी बाट देखते हार गई है । जीभ भी भजन करते करते घिस गई है। हे परमात्मा फिर भी आपके घट मे दया नही आती क्या? ||११||

तुमकूं दया न ऊपजे || ब्रेह दु:खि क्रतार ||
के किरपा कर केसवा || नई तर मुज कूं मार || १२ ||

हे करतार बिरहन बहुत दु:खी है फिर भी आपको दया नही आ रही है क्या?हे प्रभु या तो आप मेरे पर दया करो या मुझे मार डालो। ||१२||

तुम हम बिचे केसवा || छेती कितियक होय ||

ऊँचाँ सुराँ पुकारीयो || पाछो जाब न कोय || १३ ||

हे प्रभु आपके व मेरे बीच कितनी दुरी है यह मै समज नही पा रही । बहुत उंची आवाज से मैने आपको पुकारा अॅने जोर दे देकर रामस्मरण किया तो भी आपका वापीस कोई जवाब नही आया ? || १३||

हेला दे दे सांईयाँ || जन की पड़ी कटूक ||
नेड़ा होतो सांभळो || ब्रिहे पुकारे भूक || १४ ||

हेला दे दे साईया अॅने धारोधार भजन करने पर भी आपकी प्राप्ती नही होना अीसकी मुझे चिन्ता हो रही है। आप नजदीक हो तो मेरी सुणो,मै आपको आतुरता से पुकार रही है ऐसा बिरहनी कह रही है । ||१४||

बिलबिलती बिरहन फिरे || तुं ही तुं करे पुकार ||
पपया ज्यूं लिव रही || अंतर दरद अपार || १५ ||

बिरहन आप ही आपको पुकारती हुई बिलखती हुई जिधर उधर फिर रही है । बिरहनी कहती है की मेरे अतंर मे आपका न मिलनेका अपार दर्द है । मुझे आपकी पपैया की तरह लिव लगी है । ||१५||

मे रोगी थी पीवजी || तब लग भूक न प्यास ||
जब लग कदे न बोलीया || पीव हमारे बास || १६ ||

हे मालीक में रोगी यानि चौरासी मे थी तब तक तो आपसे मिलने की भुख प्यास नही थी। अिसकीअे तब तक मै आपको मिलनेकी कभी भी नही बोली जबकी आप मेरे आत्मा मे मेरे पास ही थे। ||१६||

भूक लगी प्यास्याँ मरूं || अब हर रहयो न जाय ||
ज्युं त्यूं समजो साईयाँ || नीर पीलावो लाय || १७ ||

मै आपके दर्शणो की भूख प्यास से मर रही हूं । अब प्रभु मुझसे रहा नही जाता है । जैसे तैसे आप परमात्मा मुझे समजो व दर्शन देकर ज्ञानरुपी जल पिलाओ । ||१७||

भूक हमारी खोय हो || सीतळ करो सरीर ||
बिरहन बूई जात हे || मोय बंधा वो धीर || १८ ||

हे परमात्मा आप मेरी अमर लोक के भूख की चाहत को मिटा दो और अमरलोक के दर्शन देकर शरीर को शांती दो । मै बिरहन दु:ख मे बही जा रही हुं,मुझको आप धीरज बंधाओ। ||१८||

भव सागर चहुँ दिस भऱ्यो || खाली दिसा न कोय ||
कित होय आऊँ साईयाँ || थाह न सूझे मोय || १९ ||

भवसागर चारो दिशा मे भरपूर भरा है । कोई दिशा खाली नही है । मुझे यह नही सुझ रहा है कि भवसागर को पार करके आपसे कैसे मिलूं । ||१९||

जळ बंब जळा कार हे || देखूं दिष्ट पसार ||
प्रीतम त्तम बिन को नही || डूबी भव जळ बार || २० ||

दृष्टी पसार कर देखती हूँ तो सब तरफ भव जल ही भव जल है यानी काम,क्रोध,अहंकार से भरा हुआ भवसागर ही भवसागर है । हे प्रभु आपके बिना कोई बचाने वाला नही है और मै तो भवसागर के जल मे डुब रही हूँ । ||२०||

तुम कारण बिरह सुंदरी || तजी जात कुळ काम ||
जुग सुख सारा प्रहऱ्या || दे द्रसण मुज राम || २१ ||

आपके लिये विरहन सुन्दरी ने जाती,कुल व कामना आदि अॅने माया के सुखो का त्यागन किया है व संसार के सारे सुखो को छोडा है यह आप समजो। हे रामजी यह समजकर मुझे दर्शन दो । ||२१||

तन मन सीस अंवार के || मे लूं भाँय ऊतार ||
टुकि एक द्रसण दिजिये || माधो मुकन मुरार || २२ ||

तन मन व सिर आप पर वार कर पृथ्वी पर रखती हूँ मतलब भक्ती मे लगाती हुं। हे रामजी, हे माधव,हे मुरारी मुझे टुक भर याने जरासे समय के लिअे तो भी दर्शन दो। ||२२||

ओर सुख सारा लहे || मेरे काम न कोय ||
अरस परस मिल साईयाँ || द्रसण दीजे मोय || २३ ||

हे रामजी तीनो लोको के जितने भी सुख है वे मेरे काम के नही है। हे साईयॉ आप मुझे अरस परस दर्शन दो। ||२३||

तुम बिन सब बिड लोक हे || सुरग मध पाताळ ||
जहाँ जाऊँ तहाँ साईयाँ || तम बिन सब मुख काळ || २४ ||

मेरे लिअे आपके बिना स्वर्ग,मध्य व पाताल ये सभी लोक पराअे है । हे रामजी,जहां जाती हुं वहाँ आपके बिना सब जगह काल दिखता है। ||२४||

बिरह जक्त कूं देख के || रोय रही दिल मांय ||
जम डंड मेरे सांईयाँ || कब जुग भुगतु जाय || २५ ||

बिरहन संसार को देखकर दिल मे रो रही है। हे रामजी जमराज के डंड से मेरा कब छुटकारा होगा याने जन्म मरण कब मिटेगा यह बताओ। ||२५||

ज्यां देखूं ताहाँ दु:ख हे || सोचर कियो बिचार ||
तम बिन सम्रथ साईयाँ || जुग सिर जम की मार || २६ ||

जहां देखती हूँ वहाँ दु:ख ही दु:ख है। यह सोचकर विचार किया तो आपके बिना हे समरथ स्वामी संसार मे सुख देनेवाला कोई नही है । संसार के सिर पर तो जम की मार ही मार है। ||२६||

देस बदेसां मे फिरी ।। सुखी न देख्यो कोय ।।
हाय बोय के बिच मे ।। रहयो जक्त सब रोय ।। २७ ।।

मै देश विदेश यानी तीन लोक मे सब जगह फिरी परन्तु किसी को सुखी नही देखा । सारा संसार जन्म मरण के हाय बोय के बिचमे रो रहा है। ।।२७।।

जक्त देखकर बिरहनी ।। अंतर भई ऊदास ।।
तम बिन सम्रथ साईयाँ ।। जम गळ घाली फांस ।। २८ ।।

बिरहन संसार को देखकर अतंर मे उदास हो रही है। हे समरथ प्रभु आपके न मिलने कारण जमराज ने सबके गले मे फासी डाल रखी है। ।।२८।।

आठ पोर सेसांर मे ।। काळ करम की बात ।।
बिरहन कूं डर ऊपज्यो ।। मो जम घाले हात ।। २९ ।।

संसार मे रात दिन दु:ख देनेवाले काल करम के सिवाय दुसरी बात ही नही है। बिरहन को भी डर पैदा हो रहा है कि जमराज मेरे गले मे भी हाथ न डाल दे । ।।२९।।

सब जग धुंके दुंवाडज्यूँ ।। आग बिना सब लोय ।।
बिरहन कूँ बिरह ऊपजे ।। जुग दु:ख पडत्ता जोय ।। ३० ।।

सब संसारी बिना आग के ही आग मे जल रहे है। संसार को दु:ख मे पड्ता हुआ देखकर बिरहन को आपकी मिलने की बिरह हो रही है। ।।३०।।

तुम तज ओटे मे फिरी ।। हिंडी ब्हो घर बार ।।
सब स्वारथ के मिंत हे ।। बिन सांई भरतार ।। ३१ ।।

हे परमात्मा मै आपको छोड्कर चौरासी मे जहाँ वहाँ फिरी और नाना प्रकार की योनीयो मे गई। आप के बिना सभी योनीया मे स्वार्थ की दोस्ती है। ।।३१।।

अेतां दिन मद अंध थी ।। कछु अन कियो बिचार ।।
अब सुज्यो मुज सांईयाँ ।। तुम मेरा भ्रतार ।। ३२ ।।

इतने दिन मै मद मे अन्धी हो गअी थी। मेरे पती कौन है इसका कुछ भी विचार नही किया। अब मुझे मालुम हुआ कि आप मेरे पति हो। ।।३२।।

छेला संग जुग जुग रमी ।। दिन दिन किया अनेक ।।
सुख नही पायो सुंदरी ।। हुई खराबी देख ।। ३३ ।।

जुग जुग मे आनदेव की उपासना मे रमी व दिन दिन अनेक प्रकारके आन देवताओकी उपासना की । इस कारण आत्मारुपी सुंन्दरी को सतस्वरुप पद का सुख नही मिला उल्टा चौरासी के महादु:ख पडे अैसी मेरी खराबी हुअी। ।।३३।।

भोळप मेरे सांईयाँ ।। मे थी बडी गिवाँर ।।
तमसा प्रीतम छोड के ।। गई आन की लार ।। ३४ ।।

हे प्रभु यह मेरा भोलापन था। मै बडी मुर्ख थी। आप जैसे पति को छोड्कर अन्य

देवताओको पति समजकर उनकी उपासना की। ||३४||

बडा बडाई ना तजे || आद अंत हर जोय ||
सूरज तज दीयो करे || बुरो न माने कोय || ३५ ||

बड़ा मनुष्य आदि से अंत तक अपने बड़प्पन को नही छोड़ता। सुरज के प्रकाश मे भी कोई दीपक जलाता है तो सुरज बुरा नही मानता। ||३५||

कीया सो कर लिया || बोहोत खून करतार ||
भावे बगसो सांईयाँ || भावे गरदन मार || ३६ ||

हे करतार मैने बहोत से खुन,अपराध जो करने थे वे तो कर लीअे। अब इन अपराधो को आप माफ करो या मेरे गरदन पे मार दो अॅने मुझे फासी दो। ||३६||

सरणो परथन छोड सूं || तार मार दु:ख देह ||
तन मन सब अरपीया || पीछे क्या हर लेह || ३७ ||

चाहे आप मुझे मारो या तारो या दु:ख देवो मै आपकी शरण नही छोडूंगी। मैने तन मन सब आपको अर्पण कर दिये है अब मेरे पास दुजोको देने लिअे क्या है। ||३७||

हर बिन मुखां न बोल सुं || सुरत समोऊँ माँय ||
तन कूं खाक मिलाव सूं || के हर मुज बतलाय || ३८ ||

हे रामजी मै रामनाम के बिना मुखसे कुछ नही बोलुगी। हे हर मै आपमे मेरी सुरत समाके रखुगी। हे प्रभु आप मुझे बतलाओ नही तो मै अपने आपको रवारव मे मीला दुगी। ||३८||

आ पच करके जीव दूँ || बिरहन दु:ख अपार ||
क्यूँ जीवे को सांईयाँ || जळ बिन मीन बिचार || ३९ ||

बिहरन को अपार दु:ख है। मेरे मे जीवन खतम् कर देने सरीखे बिचार आते है। हे परमात्मा पानी के बिना मछ्ली जीन्दा कैसे रह सकती है। ||३९||

दादर दस दिन खटकड़े || मच्छी रहे न कोय ||
बिरह बिचारी क्या करे || तुम बिन यूं दु:ख होय || ४० ||

मेंढक पानी बिना पांच दस दिन तक जिन्दा रह सकता है लेकिन मच्छी थोडी देर भी नही रह सकती है। बिरहन क्या कर सकती है बिरहन को आपके बिना मछ्ली के समान दु:ख हो रहा। ||४०||

जळ बिन नागर बेलड़ी || पेप फूल कुमलाय ||
तुम बिन सम्रथ सांईयाँ || बिरहन यूँ दु:ख पाय || ४१ ||

नागर बेल व फूल बिना पानी के कुमला जाते है। इसी तरह बिरहन,हे समर्थ सांइयॉ आपके बिना दु:ख पा रही है। ||४१||

चिकोर आग न बीसरे || दूजी करे न चूण ||

जन सुखिया के बिरहजी || हर बिन माने कूण || ४२ ||

चकोर आग को नही भुलता व दुसरी चीज को नही खाता। आदि सतगुर सुखरामजी महाराज कहते है की, बिरहन ॲने आत्मा परमात्मा के बिना किसीको भी मानती नही है। ||४२||

बिरह दु:खारी क्या करे || बोहो दु:ख पड्या सरीर ||
घायल धिरज क्यूँ धरे || तां पच दूणी पीर || ४३ ||

बिरहन ॲने आत्मा को शरीर मे बहुत दु:ख लग रहा है। वह दुख्यारी क्या कर सकती है। आपके शिवाय घायल बिरहनी कैसे धैर्य धारण करेगी उलटी आप न मिलने कारण उसे दूणी पीड हो रही है। ||४३||

घायल निंद न संच रे || सिस्कत रेण बिहाय ||
प्र उपगारी जुग मे || को मो दु:ख बतलाय || ४४ ||

जो घायल होता है उसको नींद नही आती है। घायल के सिसकते सिसकते रात दिन एक सरीखे बीतते है। संसार मे ऐसा कौन पर उपकारी है जो मेरे इस दु:ख को मीटाऐगा?||४४||

बिरह बिसारे ने पड़े || दिन दिन दुणी होय ||
सुरत न छाडे दु:ख कूं || बेदल रोवे जोय || ४५ ||

परमात्मा को भुलाने पर भी मै परमात्मा की बिरह नही भुल पा रही उलट रातदिन मुझे बिरह दुणी हो रही है। मेरी सुरत परमात्मा न पाने के दु:ख को नही भुल पा रही व रात दिन परमात्मा को पाने के लिऐ रो रही। ||४५||

दर्दवान लौलिन होय || बैद बूलावण जाय ||
बिरह पुकारे पीड़ सूं || सांई मलम लगाय || ४६ ||

जो दर्द मे लीन होता है वो वैद्य को बुलाने जाता है । बिरहन दर्द के मारे पुकार रही है व परमात्मा को निरंतर याद कर रही है । ||४६||

औषध दीजे आण के || हरि बेद भ्रतार ||
चोरांसी के रोग की || पावो जड़ी बिचार || ४७ ||

हे हरि आप ही मेरे वैद्य व भरतार हो। ऐसी दवा दीजीये जिससे मेरा चौरासी का रोग जन्मना मरना मिट जावे। ||४७||

ऐसो औषध कीजीये || द्रद रोगं सब जाय ||
आवा गवण न ऊंपजूँ || जामण रोग मिटाय || ४८ ||

हे हर ऐसी औषध किजीये जीससे मेरा सब रोग चला जाय। मेरा जन्म-मरण के रोग से छुटकारा हो जाये। ||४८||

मे तुज सुणियो केसवा || पूरण बेद सधीर ||

सर्णे जुग जुग ऊबरे || मरण न पावे बीर || ४९ ||

हे केशवा मैने आपके लिये ऐसा सुणा था कि आप पूरे वैद्य है। जुगान जुग से जो जो शरण मे आये उनका सभीका उध्दार हो गया है वे फिरसे जन्म मरण मे नही आये । ||४९||

अमर किया जुग माँय थे || जामण रोग मिटाय ||
सो मे सुणियो केसवा || ग्यान नग्र जाहाँ जाय || ५० ||

जो आपके शरण मे आया है उसका आपने जन्म मरण का रोग मिटा दिया व अुसे संसार मे अमर कर दिया। हे केशवा यह मैने ग्याननगर याने सतस्वरुप सत्संग व कथा स्थल मे जाकर सुना है। ||५०||

पूरण परमानंद हो || गरिबन के प्रतपाळ ||
जुग जुग दुर्बळ तारीयाँ || अब हर मोय संभाळ || ५१ ||

आप गरीबो का प्रतिपाल करनेवाले व गरीबो को पूर्ण परमानन्द देने वाले हो। जुग जुग से आपने दुर्बल गरीबो का उध्दार किया है। हे हर मै भी गरीब दुर्लभ हुँ अब आप मुझे सम्भालो। ||५१||

बेगा थकाँ संभाळ हो || ओसर मती गमाय ||
तन मन थकाँ सवार थी || धन हर को कुण खाय || ५२ ||

हे हर जल्दी मेरी सम्भाल करो। हे हर अब मेरे मनुष्य देह का समय मत जाने दो। मैने तन मन आपको अर्पण कर दिया है फिर आपके इस तन रुपी धन को कौन खा सकता है। ||५२||

आगे पाछे मधले || तुम हो तारण हार ||
तो काहे कूं दु:ख दिजीये || अब ही मिलो बिचार || ५३ ||

आगे पीछे व मध्य मे आप ही मेरा उध्दार करनेवाले हो तो मुझे दु:ख क्यो दिखला रहे हो। मेरे दु:ख का विचार कर आप मुझे आपकी शरण मे लो। ||५३||

आज काल पाँचा दिना || ने:चे नेट निधान ||
तुम ही तारण हार हो || ओर न आवे जान || ५४ ||

मेरा यह पक्का निदान है कि आज,कल या पाँच दिनो मे आप मेरा उध्दार करनेवाले है। आपके शिवाय मेरा उध्दार करनेवाले दुसरा कोई नही हो सकता। ||५४||

ताँ ते अब ही प्रगटो || दरसो दीन दयाल ||
गुण ओगण मत देख हो || आदू प्रीत संभाल || ५५ ||

हे दिनदयाल अब ही प्रगट होकर मुझे दर्शन दो। मेरे गुण अवगुणो को मत देखो । मेरी आदू की प्रिती को संभालो। ||५५||

तुम तारो जब सांईयाँ || क्हो कुण पाल हार ||

पीव बुलावे नार कूं || कहो कुण आड़ो यार || ५६ ||

आप उध्दार करते है तो आपको कौन रोकनेवाला है। पति अपने पत्नी को बुलाता है तो दुसरा कौन आडे आता है। ||५६||

रात दिवस कारण नही || पिव मन मान्या जोग ||
क्रम जक्त पड़िया रहे || जब पिव चावे भोग || ५७ ||

रात व दिन का कोई कारण नही है। जब पतीकी इच्छा होती है तब वह बुलाता है। परमात्मा यदि आप मिलना चाहे तो करम काल रुपी जगत आपके कैसे आडे आ सकता है। ||५७||

रूत दाता यूं ग्यान के || जे नर प्रहर जाय ||
कोढी हुवे जुग सांईयाँ || अरथ निगम के माय || ५८ ||

निगम वेदो मे ऐसा ग्यान है की ऋतवंत्ती को पुरुष ऋतु दान नही देता है तो वह कोढी होता है। यह मेरा मनुष्य जन्म ऋतु दान का समय है। इसमे आप प्राप्त नही हुवे तो मेरा क्या दोष है। ||५८||

बिरहन आतर होय रही || पीव मीलन के काज ||
जात कडूंबो लोक की || छोड़ी है कुळ लाज || ५९ ||

बिरहानी आत्मा अपने पति परमात्मा से मिलने के लिये उतावली हो रही है। इसने जाति कुटुम्ब व कुल की लाज छोड दी है। ||५९||

सरम सन संक्या नही || तीनू दिया बुहाये ||
पीव मीलण के कारणे || बके चोवटे आय || ६० ||

बिरहन को न शरम है न संशय है, न सन है। अुसने तीनो को छोड दिया है। पति से मिलने के लिये सबके सामने भक्ति कर रही है। ||६०||

सो दिन कहौ कब ऊग सी || पीव रमेंगे सेज ||
मन की आसां पुरहुँ || हिल मिल दे घर भेज || ६१ ||

पती के साथ हीलमिलकर रमने की मेरे मन की आशा कब पुरी होगी? वह दिन कब उगेगा? ||६१||

बिरह आस मुख गेह रही || स्वातक सीप कहाय ||
आन सकल सब प्रहर्‍या || बंधी पीव मत माँय || ६२ ||

जैसे सीप स्वाती की बूंद के लिये आशा करती है ऐसे ही बिरहनी उस परम पद की प्राप्ती की आशा कर रही है और सब आन देवताओ की भक्ती को छोड्कर सतस्वरुप पीव के पत मे बंधी रहती है। ||६२||

पत सूं सुण आगे चले || करो गुंझ घर जाय ||
अजुंन आया सांईयाँ || हे ओगण मुज माँय || ६३ ||

जो इस भक्ती को विश्वास के साथ करेगी वह आत्मा चौऱ्याशी लक्ष योनी मे न जाते पती के सतस्वरुप पद मे जायेगी। मै सतस्वरुप पद मे अभी तक नही पहुँची ओससे मैने भक्ति विश्वास के साथ नही की यह मालुम होता है व आप नही मिले मतलब मेरे मे अवगुण भरे है ऐसा मुझे मालूम होता है । ।।६३।।

लानत मेरे जीव कूं ।। फिट मन तोय धिरकार ।।
पीव बिना जुग जीवणो ।। कायर कपट गिवांर ।। ६४ ।।

मेरे जीव को लाणत है। हे मन तुझे विक्कार है। परमात्मा के बिना संसार मे जीना कायर कपटीयो व मुर्खो का काम है। ।।६४।।

मोत बिना मरबो नही ।। जिवन जुग अकाज ।।
बिरहे पुकारे पींड सूं ।। तुम बिन हर देहे भाज ।। ६५ ।।

मौत के बिना मृत्यु नही आती। जगत मे मेरा जीना व्यर्थ है। बिरहनी दु:ख के साथ प्रार्थना करती है कि आपकी प्राप्ती के बिना हे हर इस देही को खत्म कर दो। ।।६५।।

दूजा दु:ख दिराई ये ।। सब से सूँ क्रतार ।।
आप मिल्या बिन बाहेरी ।। बिरहन मारो मार ।। ६६ ।।

हे हर दुसरे दु:ख आप मुझे कितने भी दिरावो सब दुखो को मै सहन करुंगी परन्तु आपकी प्राप्ती के बिना बिरहन को अपार दु:ख हो रहे है यह मै सहन नही कर सकती। ।।६६।।

रूम रूम सब थर हरे ।। नख चख सकळ सरीर ।।
तुम बिन मेरे सांईयाँ ।। बिरहन धरे न धीर ।। ६७ ।।

मेरा सारा शरीर रोम रोम नख से चख तक थर्रा रहा है। हे साईयाॅ आपकी प्राप्ति के बिना बिरहन को धैर्य नही हो रहा है। ।।६७।।

अंतर लगी पुकारणे ।। राखि रहे न कोय ।।
पीव बात जब ही सुणे ।। तब ही भेळी होय ।। ६८ ।।

हे हर बिरहणी अंतर मे आपको पुकार रही है। बिरहनी का यह पुकारणा रोखने से भी नही रुक रहा है। हे हर आप मिलणे की बात सुणोगे तब ही बिरहणी शान्त होगी। ।।६८।।

पाँख हुवे उड़ जाईये ।। पीव बसे ऊण देस ।।
जाझा करूं बिछावणा ।। नाना बिध का बेस ।। ६९ ।।

जीस देश मे पती परमात्मा बसते है उस देश मे पहुँचाने के लिअे मुझे पंख होते थे तो पंख से उड जाती थी । हे हर आपकी प्राप्ती के लिअे मुझे जो जो भी करना पडे वह सब भेष मै धारण करुगी। ।।६९।।

पीव बसे उण देस मे ।। धिन्न नर डाबर नार ।।
निस दिन खेले मेहल में ।। मुख देखे भ्रतार ।। ७० ।।

जो हमेशा पीव के साथ रहती है वह सभी तरह से सुखी व आनन्द में रहती है। वह रात दिन परमात्मा के साथ रह कर परमात्मा के दर्शन करती रहती है। ।।७०।।

बाताँ सरब सुहाग की ।। बिरहन लीवी जाय ।।
आगे पीव निवाजीया ।। यूं संता कूं आय ।। ७१ ।।

बिरहन ने परमात्मा की प्राप्ती के सब साधन धारण कर लिये है। आपने पहले भी अनंत संतो पर कृपा की है वैसे ही आप मेरे पर भी कृपा करो। ।।७१।।

ज्यूं ज्यूं बिरहन सुणत हे ।। पीव प्राक्रम बीर ।।
आतर अतंर अधीर बो ।। निमष न खावे धीर ।। ७२ ।।

जैसे जैसे बिरहणी परमात्मा का प्राक्रम सुण रही है वैसे वैसे बिरहन को परमात्मा के दर्शनो की तीव्र इच्छा हो रही व अुसे परमात्माके दर्शणका क्षणभर का भी धीर नही है। ।।७२।।

नारी कूं नर प्रण के ।। पीव घरे ले जाय ।।
गुण ओगण सब ढाफके ।। अपनो बिड्द निभाय ।। ७३ ।।

जैसे पुरुष स्त्री को परण कर अपने घर ले जाता है तो उसके गुण ओगुण का विचार न करते अपने बिड्द को निभाता है। ।।७३।।

मे बिरहणी जुग मे फिरूँ ।। प्रीतम तुमे ओ गाळ ।।
बिड्द बिचारो साही बो ।। बेगी करो संभाळ ।। ७४ ।।

मै बिरहणी जगत मे आपकी भक्ती करके चौरासी मे फिरी तो इसमे आपकी निन्दा है। आप अपने बिड्द का विचार कर मुझे जल्दी सम्भालो। ।।७४।।

ईत ऊत कोई देखसी ।। बाहिर भीतर जाय ।।
अब बिरहन ब्हो ऊबके ।। दाबी दबे न माय ।। ७५ ।।

मै आपकी प्राप्ती के लिये बिरह करती हूँ। बाहर भितर जाने वाले देखते है फिर भी संसार की लज्जा से बिरहन नही दबती उलटा आपकी प्राप्ती के लिये ज्यादा बिरह करती है। ।।७५।।

निजर नेण झड़ लागीयो ।। आंसू तूटे नाय ।।
सुध बुध बिसरी जक्त की ।। पीव ही पीव कहाय ।। ७६ ।।

आँखो से एक सरीखे आँसू बह रहे है वे आँसु पलभर के लिए भी नही टूट रहे है । जगह की सब सुध बुध भूलकर रात दिन भजन मे ही लगी रहती है। ।।७६।।

चोड़े चाँवटे चापटे ।। देवे हाक पुकार ।।
हे कोई असो जुग मे ।। मुज पीव मिलावण हार ।। ७७ ।।

मै बाजार मे सब जगह चौडे आवाज देकर पुकार रही हुँ कि जगत मे ऐसा कोई मुझे परमात्मा की प्राप्ती करा देने वाला है क्या ? ।।७७।।

ब्याकुळ दु:खी सरीर हे || व्हे पीड़ा मन माय ||
खान पान सब बिसरी || पीव ही पीव भणाय || ७८ ||

मेरा शरीर बहुत दु:खी और व्याकुल हो रहा है। मन मे भी बहुत पीडा हो रही है। मैं रात दिन भजन करने मे लगकर खाना पीना भूल गई हुँ और पीव ही पीव पुकार रही हुँ। ||७८||

कहयो न माने ओर को || सुणे न दूजी कान ||
बिरहन सब ही बिसरी || नर नारी घर आन || ७९ ||

मैं दूसरो का कहना नही मानती। दूसरी कोई भी बाते कान मे नही सुनना चाहती। पृथ्वी पर जितने भी स्त्रि पुरुष है, परमात्मा के याद मे उन सबको भूल गई है। ||७९||

प्रीतम प्यारो जाँ मिले || मोय सुणावे आय ||
बिरहन ऊठ च्रणा लगे || धिन धिन आज कुवाय || ८० ||

जिस साधन से परमात्मा की प्राप्ती होती है वह ग्यान मुझे कोई सुणावे तो मै उठकर उनके चरणो को स्पर्श करुंगी। मेरे लिये वह दिन धिन कहलाऐगा। ||८०||

धिन तुम दिन भल उगीयो || केहे प्रितम समाचार ||
हम घर को कब आवसी || सोई सिर्जण हार || ८१ ||

वह दिन मेरे लिये धिन व अच्छा उदय हुआ है। जिस दिन मुझे साई सिरजणहार के प्राप्ती का ग्यान मिलेगा अुसदिन मेरे घट मे साई सिरजणहार के दर्शन होगे। ||८१||

सब सूं मिल अेसी कहे || सुध नहि बाडे. कोय ||
पीव पीव लग रही हे || सब घर आही होय || ८२ ||

सुध को भुलकर जो जो जन मिलते है,उनसे यही कहती हुँ कि मुझे सारे शरीर मे सिरजनहार सांई के प्राप्ती की लगन लगी है। ||८२||

मेरा पीव बताईयो || तम जाणन हारे आय ||
माँगोगा सो सब देऊँ || जे मुज पीव मिलाय || ८३ ||

जो जो तुम पीवको जाननेवाले हो वे सभी आकर मुझे सिरजनहार साई की प्राप्ती का साधन बता दो। मुझे सिरजनहार साई की प्राप्ती हो जायेगी तो तुम जो मांगोगे सो सब मैं दूंगी। ||८३||

मेरा प्रीतम कहाँ बसे || सो कहो मोय अेनाण ||
कुण ऊणीयारो रंग हे || कब भेटूँ दीवाण || ८४ ||

मेरे परमात्मा पती कहा रहते है वो जगह मुझे बतलाओ। उनका क्या स्वरुप है, क्या रंग है व कब मुझे उनकी प्राप्ती होगी यह बताओ। ||८४||

बिरह बेरागण होय रही || चाले निर्मळ चाल ||
पीव बिना भटकत फीरे || पड़ता ब्हो जुग व्हाल || ८५ ||

बिरहन तीन लोक व जगत के सुख नही चाहती । वह सिर्फ आपकी प्राप्ती चाहती है । वह बेरागण होकर निरमल चाल चल रही है । पती परमात्मा के बिना भटकने से बेहाल होगे यह बिरहणी समजती है । ||८५||

बिरह संदेसो मोकले || सुणज्यो सिर्जन हार ||
तुम होतेसी कीजीयो || मोपे गुना निवार || ८६ ||

बिरहन प्रार्थना कर रही है । हे शिरजनहार मेरी प्रार्थना सुणो । मेरे अवगुणो की तरफ न देखते हुये अपने बिड्द का विचार करो । ||८६||

म्हे गुण ओगण ब्हो किया || तुम सूं दूरा जाय ||
किया सो म्हे भुक्तिया || अब मुज पीव मनाय || ८७ ||

मैने आप से दूर जाकर शुभ अशुभ बहुत कर्म किये है । मै मेरे किये कर्मो का फल भोग रही हुँ अब आप मेरे पर कृपा करो । ||८७||

चृणा राखो रामजी || बरसो दीन दयाल ||
गुण ओगण सब बगसो सही || आदू प्रीत संभाळ || ८८ ||

हे परमात्मा मुझे आपके चरणो की शरण दो व मुझ पर कृपा करो । मेरे गुण अवगुणो को माफ कर दो । आपके बिड्द को निभावो । ||८८||

बिरहे पुकारे पीड़ सूं || सुणियो त्रिभुवन राय ||
बिडद तुमारो जाण के || द्रसण दीजे आय || ८९ ||

बिरहणी प्रेम से प्रार्थना करती है,हे त्रिभुवन राय सुणो । आपके बिड्द का ध्यान करके मुझे दर्शन दो । ||८९||

मे गुणवंती सुंदरी || ओगण भऱ्या अपार ||
बाँह गहयाँ की लाज हे || सुण सांई भ्रतार || ९० ||

मै गुणवंती सुंदरी,मेरे मे अपार औगुण भरे है । हे परमात्त्मा मैने आपकी शरण ली है,शरण आये की लज्जा रखो । ||९०||

ओछे जळ ज्यूँ माछली || तलफत हे ईण रीत ||
जोबन चालो जात हे || हे साहिब कर चीत || ९१ ||

थोडे पानी मे मछ्ली रात दिन तडफती है ऐसेही मै भी मेरा मनुष्य जन्म चला जा रहा है इसलिये तडफ रही हुँ । हे परमात्मा आप मेरे इस दशा तरफ ध्यान दो । ||९१||

जक्त भेद जाणे नही || किण सूं कहूँ पुकार ||
रूतवंती रूत कारणे || मन अंतर बो मार || ९२ ||

जगत इस भेद को नही जानता । किसको जाकर पुकार कहूं । जैसे रुतुवंती रुत काल मे पती के लिअे दु:खी रहती है वैसेही मनुष्य शरीर से ही परमात्मा की प्राप्ती होती है व मनुष्य शरीर चला गया तो परमात्मा कैसे प्राप्त होगा इसलिये मेरा मन अंतर मे बहुत

|| राम नाम लो, भाग जगाओ ||

दु:खी हो रहा है । ।।९२।।

कही सुणी जावे नही ।। ना कोई सुणणे हार ।।
रूतवंती के दरद की ।। साहेब सुणो पुकार ।। ९३ ।।

मेरा दु:ख किसी से सुना नही जाता,न कोई सुननेवाला है । जैसे रुतुवंती का दर्द पती के शिवाय और दुजा कोई नही समज सकता उसीतरह इस बिरहनी के दर्द को साहेब के शिवाय दुजा कोई नही समज सकता इसलिअे हे साहेब आप मेरी यह प्रार्थना सुनो । ।।९३।।

पपया ज्यूँ पच रही ।। अंतर पीड़ निराट ।।
साहिब हम घर आवजो ।। निस दिन जोऊँ बाट ।। ९४ ।।

जिस तरह पीडा के कारण पपैय्या रात दिन पी पी रटता है इसी प्रकार की पुकार बहोत पीडा के कारण आपके लिये मेरे अंतर मे बहोत हो रही है । इसलिये हे परमात्मा मुझे अंतर मे दर्शन दो । मै रात दिन आपकी बाट जो रही हूँ । ।।९४।।

नेणा नींद न संचरे ।। अन पाऊँ बिन जोग ।।
ध्रिग हमारो जीवणो ।। हर द्रसण बिन भोग ।। ९५ ।।

मेरे आँखो मे रात दिन नींद नही आती है। अन्न भी बिना इच्छा के पाती हूँ । मेरा जीना परमात्मा के दर्शन पाये बिना धिक्कार है । ।।९५।।

बिरहन रोवे नेण भर ।। सांई सुणो पुकार ।।
बिलबिलता दिन नीस रे ।। बिन मिलीयाँ भ्रतार ।। ९६ ।।

बिरहनी रात भर रो रही है । हे भरतार मेरी प्रार्थना सुणो । मेरे दिन आपकी प्राप्ती के बिना बिलखते हुये निकल रहे है । ।।९६।।

किरपा कीजे केसवा ।। मो बिरहन पर आय ।।
तम मिलीयाँ बिन साईयाँ ।। सब दिन दुबर जाय ।। ९७ ।।

हे भरतार मुझ बिरहनी पर कृपा करो । आपके दर्शनो के बिना मेरे दिन मुस्कीलो से निकल रहे है । ।।९७।।

पीव बिहुणी सुंदरी ।। ज्यूँ ज्यूँ रहे उदास ।।
बिरहन प्रीतम बाहेरी ।। तज तीहे देहे आस ।। ९८ ।।

जिस तरह पती के बिना सुंदरी उदास रहती है उसीतरह यह बिरहन भी तीन लोगोके माया के सुखो की आशा छोड्कर आपके दर्शन की आशा रखती है । ।।९८।।

बेग संभाळो साईयाँ ।। तुम बिन रहयो न जाय ।।
सब जग दीसे थोथरो ।। ऊझड़ मेरे भाय ।। ९९ ।।

आप मेरी जल्दी सम्भाल करो । आपके बिना मै नही रह सकती । मुझे यह जगत अच्छा नही लगता । यह जगत उजाड सा लगता । ।।९९।।

मो कूं आण संभाळीयो || अेक रस्याँ बतलाय ||
तुम परस्या बिन साहीब || ओ तन छुटो जाय || १०० ||

हे भरतार,मेरी आकर सम्भाल करो व एक बार सन्मुख दर्शन दो । आपके दर्शनो के बिना इस शरीर से मेरी आत्मा निकले जा रही है । ||१००||

क्हा मे कहूँ बणाय कर || तुम सुं छिपे न कोय ||
गुण ओगण मुज मे भऱ्या || बिड़द तुमारो जोय || १०१ ||

मै आपको ये बाते बणाकर नही कह रही हुँ । ये बाते बणाकर आपको क्या कहुँ । आपसे कोई छीपा नही है । मेरे मे तो गुण आगुण बहुत भरे हुये है । आप अपने बिड्द की तरफ देखो । ||१०१||

तुम प्रितम पुरण ब्रम्ह हो || सब मन सारत काम ||
आतम कन्या बिरहनी || तुम चाहत हे राम || १०२ ||

हे प्रितम परमात्मा आप पुर्ण ब्रम्ह याने सतस्वरुप ब्रम्ह हो । आप सबकी मनोकामना पुरी करनेवाले हो । हे रामजी यह आत्मकन्या बिरहनी आपके दर्शन चाहती है । ||१०२||

बाबल मेरा ब्याव कर || बेगो लगन लिखाय ||
आतम कँन्या बिरहनी || अत आतर मन माँय || १०३ ||

हे परमात्मा जल्दी से जल्दी आपकी शरण मे लो । यह आत्मकन्या बिरहनी अंतर मे बहुत दु:खी है । ||१०३||

पुळ मोरत दिन जात हे || दिन सुण बरस समान ||
बरस हमारे सांईयाँ || जुग बराबर जान || १०४ ||

हे सांईयाँ,एक दिन मेरे लिये एक वर्ष के समान है और एक वर्ष एक युग याने बारा वर्ष के बराबर जा रहा है । ||१०४||

जुग जाय सो सेल हे || सुख मे लखूं न कोय ||
अब बर चिंत्ता ऊपजी || छिन दुभर मुज होय || १०५ ||

हे सांईयाँ,सुख के दिनोमे जुग जाने की मालुम नही पड्ती परंतु दु:ख के दिन जाने मे पल पल मालुम पड्ता है । अब तो एक क्षण भी यदि दु:ख मे जाता है तो मुझे चिंता हो जाती है ।१०५।

अब मेरा मन युँ कहे || मोय जनम धिरकार ||
खावंद बिन जुग जीव बो || रे मन मुख हे छार || १०६ ||

अब मेरा मन कहता है की परमात्मा पती की प्राप्ती के बिना मेरा मनुष्य जन्म धिक्कार है। परमात्मा पती के प्राप्ती के बिना जगत मे जिना ही मन व मुख पर धूल पड्ने सरीखा है । ||१०६||

अकनकं वारी कामणी || या जुग सुणी न कोय ||

मो जुग जळम अकाज हे ।। तां घर मेर न होय ।। १०७ ।।

आज दिन तक संसार मे एक भी स्त्री कुंवारी रही है ऐसा नही सुणा । जब तक मुझे आपकी प्राप्ती नही होती तब तक मेरा जन्म व्यर्थ है । ।।१०७।।

राम बिना सेंसार मे ।। जनम धऱ्यो किण काम ।।
संबल फुल्यो बन मे ।। तीरथ जळ बिन धाम ।। १०८ ।।

रामजी के प्राप्ती के बिना संसार मे मनुष्य जन्म धारण करना किस काम का है । वन मे संबल फुलता है वो किसी के काम नही आता है । जिस तिरथ मे जल व ठहरने का स्थान न हो तो वह तिरथ किस काम का है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।१०८।।

।। इति बिरह को अंग संपूरण ।।